सनातन सत्गुरू

शिष्य थॉमसेन

मनुष्य की वास्तविक समस्या

मनुष्य की समस्या पानी की कमी, गरीबी, बुरी सरकार या बेरोजगारी नहीं है। या फिर शारीरिक बीमारी टी. बी. कैंसर या ऐड्स नहीं है। वास्तविक समस्या एक अदृष्य आत्मिक अवस्था है। यहाँ शरीर, प्राण और आत्मा में जहर फैला हुआ है, जिसे पाप कहते हैं। पाप जीवित और सच्चे परम ईश्वर का विरोध है, उसके सत्य का तिरस्कार है, और उसकी इच्छा का उल्लंघन है। इसके कारण परमेश्वर से अलगाव होता है, और संबंध टूट जाता है।

पाप, परमेश्वर की इच्छा और गुणों के विपरीत का जीवन है और ये मनुष्य में शारीरिक और आत्मिक मृत्यु उत्पन्न करता है।

चारों तरफ़ नज़र घुमा कर देखिये, चोरी, डकैती, हिंसा और हत्या, बलात्कार, धोखा, भ्रष्टाचार, अन्याय और अधर्म फैला हुआ है। बाहर छोड़िये अपने अंदर झाँक कर देखिये, ईर्ष्या, क्रोध, बैर, झगड़ा, विरोध, लालच, वासना, घमंड, और झूठ सब कुछ भरा हुआ है।

अपने जीवन के उद्देश्यों को टटोल कर तो देखिये मालूम पड़ जायेगा की हर काम के पीछे स्वार्थ है। दान देते हैं, पर साथ में नाम कमाना चाहते हैं। गरीबों की मदद करना चाहते हैं, पर अखबार में नाम लिखवाना चाहते हैं। पड़ोसी को शायद अस्पताल तो ले जाते हैं, पर बदले में कुछ उम्मीद भी रखते हैं।

कौन भटक गया है?

ईश्वर या हम, जैसे एक बच्चा मेले में खो जाता है, पर सोचता है, कि माता पिता खो गये हैं। पर सच्चाई तो ये है, कि माता-पिता नहीं बच्चा खोया है। इसी तरह ईश्वर नहीं मनुष्य खोया है।

जब तक ये सत्य हम पर प्रगट नहीं होगा, तब तक हम अपने प्रयासों के द्वारा परमेश्वर तक पहुँचने की कोशिश करते रहेंगे, सृष्टिकर्त्ता ईश्वर को हम सृष्टि की निर्जीव वस्तुओं में ढूंढ़ते रहेंगे।

सांसारिक गुरु

आज संसार में बहुत से शिक्षक हैं। बहुत गुरू हैं हर जगह धर्म प्रचार और

सभायें हैं। किताबें हैं, रेडियो और टी. वी. पर प्रवचन हैं। ज्ञान हर जगह है, पर जीवन नहीं है बोला कुछ जाता है, और किया कुछ जाता है। ईश्वरीय जीवन नहीं है। प्रभु यीशु ने समकालीन धर्मगुरूओं के बारे में कहा कि इनके पीछे चलने से न तो मोक्ष न स्वर्ग और न ही ईश्वर मिलता है, पर हाँ अंत नरक की अग्निज्वाला में अवश्य होता है। नश्वर मानव जब स्वंयं अपने को गुरू घोषित करता है, तो अपना ज्ञान बता कर लोगों को बहकाता रहता है। अपने लिये अनुयाईयों और चेलों का जमा करता है। खुद सिहाँसन पर बैठता है, बड़े-बड़े धर्मस्थल बनाता है। सोना-चाँदी इकट्ठा करता है, और अपने अनुयाईयों से दान दक्षिणा वसूल करता है, और अपनी सेवा कराता है।

सनातन सत्गुरु

प्रभु यीशु ने कहा यदि कोई प्रधान बनना चाहता है तो सबका सेवक बने, जो बड़ा बनना चाहता है वह सबका नौकर बने। सनातन् सत्गुरु प्रभु यीशु कुर्सी से खड़े हुये, उन्होंने नौकर के कपड़े पहने। और पानी लेकर वे शिष्यों के पैरों पास बैठे, और उन्होंने अपने शिष्यों के पाँव धोये। और कहा जाओ ईश्वरीय जीवन का प्रदर्शन करो जैसे मैंने किया है, तुम भी वैसा ही करो।

प्रभु यीशु स्वर्ग से आये और वहाँ की बातें हमें बताई, इसलिये हमे उनकी बातों पर विश्वास करना पड़ेगा।

प्रभु यीशु मोक्षदाता परमेश्वर के अवतार इस धरती पर मानव रुप धारण कर आते हैं, यहाँ आकर वे कहते हैं कि स्वर्ग में कोई खतरनाक ईश्वर नहीं है, कोई खूनी ईश्वर, तलवार भाला या हथियार लेकर नहीं बैठा है, पर स्वर्ग का ईश्वर हमारा पवित्र और प्रेमी पिता है, जो हर मनुष्य से उसी तरह प्रेम करता है, जैसे एक पिता अपने बीमार मरणासन्न बच्चे से प्रेम करता है, पर साथ ही साथ उसकी बीमारी से घृणा करता है, इसी तरह परमेश्वर हम से तो प्रेम करते हैं, पर हमारी पापी अवस्था से घृणा करते हैं, वह हमें बचाना चाहते हैं, हमारी मृत्यु और बीमारी का इलाज करना चाहते हैं यही कारण है, बाइबिल कहती है, परमेश्वर प्रेम है।

प्रभु यीशु का क्रूस मरण

जब प्रभु यीशु क्रूस पर, मानव पापमोचन के लिये मृत्यु की कीमत अदा करते हैं, तो उनके साथ एक तरफ एक हत्यारा डाकू भी क्रूस पर मर रहा था। उसने प्रभु यीशु के सामने अपने दुष्कर्मों को, पाप को अंगीकार किया, और याचना की, कि ईश्वरीय लोक में उसकी सुधी ली जाये। प्रभु यीशु ने डाकू हत्यारे से कहा कि स्वर्गलोक में तुम मेरे साथ आज ही पहुंचोगे, डाकू को मोक्ष मिल सका।

पाप कर्म ही से नहीं होता है, पर कर्म के पीछे विचारों और उद्देश्यों के रुप में छिपा रहता है। उदाहरण के रुप में प्रभु यीशु हत्या को पाप का फल बोलते हैं, और हृदय में भरे क्रोध को भी हत्या कहते हैं, ईश्वर की दृष्टि में क्रोध और हत्या समान पाप हैं।

प्रभु यीशु में हर पापी के लिये आशा है। चाहे वो शराबी हो या कोई वेश्या, चोर हो या कोई डाकू हत्यारा या झूठा पाखंडी धर्मगुरु, सब की मुक्ति का उपाय है। इसीलिये प्रभु यीशु मसीह की खुशखबरी का प्रचार किया जाता है।

परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो को कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो पर अनंत जीवन पाये। यूहन्ना 3:16

एक घटना

रुस में एक शहंशाह थे, जिनका नाम ज़ार निकोलस था वो रात में भेषबदल कर अपने सैनिकों की चौकियों में जाकर देखते थे, कि क्या हो रहा है। एक बार उन्होंने एक सैनिक को टेबिल पर सिर रखते और सोते हुये पाया। उसके सामने टेबल पर एक कागज़ रखा था जिसमें लाखों रुपये, जो उसने बहुत से लोगों से कर्ज़ में लिये थे उनका हिसाब था। और नीचे लिखा था, "कौन मेरा कर्ज़ चुकायेगा?" ज़ार निकोलस ने कलम निकालकर वहाँ अपने हस्ताक्षर कर दिये और लिखा "मैं चुकाऊँगा" आत्महत्या की ओर बढ़ने वाले सैनिक को मुक्ति मिली यह एक सच्ची घटना है, पर यही सत्य प्रभु यीशु मसीह ने दिखाया हमारे पापों की कीमत परमेश्वर के न्याय के अनुसार, मृत्युदंड द्वारा ही अदा की जा सकती थी। इसीलिये वे पापमोचन के लिये स्वयं बलि बनते हैं।

शारीरिक मृत्यु और उसके उपरान्त आत्मिक मृत्यु जो हमें नरक की आग में ले जाती है उससे निकास प्रभु यीशु में प्राप्त है।

आखिर प्रभु यीशु ने किया क्या है?

प्रभु यीशु ने स्वर्ग के अपने ईश्वरीय अधिकार को छोड़ा अपने ताज को अलग किया। मनुष्य रुप धारण किया और कंगाल की तरह गरीब बनकर वे इस संसार में आये (फिलिप्पियों 2:5-10)

मनुष्य मात्र के सेवक बने, और स्वर्गीय पिता के प्रेम को प्रगट किया और क्रूस की दर्दनाक मृत्यु हमारे पापों के लिए उठाई। प्रभु, यीशु के क्रूस पर इस संसार का न्याय नहीं अन्याय लटका हुआ था। मनुष्य का क्रोध, ईर्ष्या, लालच और घमंड लटका था। उन्हें कब्र में दफ़नाया गया पर तीसरे दिन अपनी ईश्वरीय सामर्थ को प्रगट करते हैं। वे जीवित हो उठे, यरुशलेम शहर और आसपास के

सैकड़ों लोगों को दिखाई दिये, और ईश्वरीय राज्य के भेदों को लोगों पर प्रगट किया। सैकड़ों लोगों के देखते देखते उनका स्वर्गारोहण हुआ। उन्होंने कहा में फिर दोबारा लौट कर आऊँगा, और तब संसार का न्याय होगा।

ये बातें कथा-कहानी नहीं है, पर इतिहास में घटी सत्य घटनायें हैं।

परमेश्वर कहता है, मनुष्य का एक बार जन्म लेना और उसके बाद न्याय होना अवश्य है।

अब सवाल क्या है?

आपके पास अंधकार है, या जीवित ईश्वर का प्रकाश? सत्य है, या मनुष्य का झूठ? आशा है या लगातार निराशा? हार है, या परमेश्वर का जीवन? पापमोचन या दिखावटी धरम करम?

क्या आप प्रभु यीशु को स्वीकार करना चाहते हैं? वे जीवित हैं क्या आप उनपर भरोसा करना चाहते हैं? प्रभु यीशु सच्ची शाँति देते हैं। ऐसी शाँति जो भय को मिटा देती है। और दु:ख पर विजय देती है।

प्रभु यीशु का नाम लेकर देखिये, आज आप मोक्ष पा सकते हैं। चाहे आप किसी धर्म-जाती रंग-रुप के क्यों न हों, प्रभु यीशु पर विश्वास करिये उसका नाम लीजिये और मेरे साथ संपूर्ण विश्वास के साथ प्रार्थना दोहराइये।

प्रभु यीशु मसीह इस संसार में आये, वे सृष्टिकर्त्ता थे, लेकिन संसार ने उन्हें नहीं पहिचाना, प्रभु यीशु ज्योति थे पर अंधकार ने उन्हें ग्रहण नहीं किया, वे अपने घर आये और उनके अपनों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया (यूहन्ना 1:5,10,11)

प्रभु यीशु आज जीवित है, वो कब्र में नहीं है, वो कोई निर्जीव वस्तु, तस्वीर या मात्र शक्ति नहीं हैं। वो सृष्टिकर्त्ता हैं, जिन्होंने परमेश्वर के स्वरूप में हम सबकी रचना की है,

मोक्ष प्रार्थना

हे प्रभु यीशु में कर्म से विचारों और उद्देश्यों से पापी हूँ, आप स्वयं परमेश्वर पुत्र बन कर आये आपने मेरे पापों की कीमत चुकाने के लिये अपना पवित्र खून बहाया और मृत्यु उठाई और आज आप जीवित हैं। आप मेरे पापों कों क्षमा करें मुझे नया जीवन दें।

अपनी पवित्र आत्मा का दानदें, ताकि मैं आपका जीवन पा सकूँ, और सिर्फ आपके मार्ग पर चल सकूँ। आज से मैं आपको अपना गुरु बनाता हूँ। मेरा आपके ऊपर संपूर्ण विश्वास और भरोसा है।

आमीन्

SHISHYASHRAM
305 D/A Sheeshmahal, Shalimar Bagh, New Delhi-110 088
e-mail:jawabjawab@yahoo.com